AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

सामाजिक संज्ञान तथा बाल विकास

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. ईश्वरी खटवानी,
मानव विकास विभाग
एस. एस. गर्ल्स कॉलेज,
गोंदिया, महाराष्ट्र, भारत

शोध सार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने आस–पास की दुनिया को सामाजिक संज्ञान के द्वारा ही समझते है। वह प्रत्येक क्षण दूसरो के तथा समूहों के संपर्क में आता है, उन्हें महसूस करता है, उनके साथ कार्य करता है। सामाजिक संज्ञान वह अनोखी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव दूसरों के साथ अपने संबंधो को संसाधित, प्रक्रिया एवं पुनः स्मरण करते हैं। इसके अंतर्गत दूसरों के संबंधो का विवरण, लोगों के शाब्दिक एवं अशाब्दिक संचार तथा समूह की गतिशीलता को समझना समाहित हैं।

मुख्य शब्द

सामाजिक संज्ञान, बाल विकास, संचार.

परिचय

सामाजिक संज्ञान का मूल सिद्धांत यह है कि व्यक्ति वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को नही समझता वरन् उन वस्तुओं और लोगों के मानसिक प्रतिनिधित्व का बोध कराते है जिनसे उनका सामना होता हैं। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि व्यक्ति स्वयं के लिए उपलब्ध समस्त सूचनाओं को संसाधित करने में सक्षम नहीं होते हैं। पहले से उपलब्ध ज्ञान संरचनाये, व्यवहार तथा प्रेरक शक्तिया यह निर्धारित करने के लिए ध्यान तंत्र को प्रभावित करती है कि कौन सी जानकारी मस्तिष्क तक पहुंचती है तथा मस्तिष्क किसे प्रक्रिया हेतु प्राथमिक देता है। परिणामस्वरूप अवधान हमारी सामाजिक वास्तविकता की मध्यस्थता करता हैं।

सामाजिक संज्ञान व्यक्ति के तंत्रिका संज्ञान प्रक्रिया का समूह हैं, सामाजिक संपर्क के दौरान व्यक्ति दूसरो के व्यवहार को समझता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न प्रकार के कौशल समाहित हैं। जैसेः सामाजिक जानकारी (चेहरे के भाव तथा संवेगात्मक अभिव्यक्ति) को समझना तथा दूसरे के मानसिक एवं संवेगात्मक स्थिति के विषय में निष्कर्ष निकालना शामिल हैं।

सामाजिक संज्ञान का विकास

सामाजिक संज्ञान का विकास की प्रक्रिया प्रायः जीवन के शुरुवात के महीनों में ही हो जाती हैं तथा जीवन पर्यंत रहती है। आयु वृद्धि के साथ–साथ बालक न केवल अपनी भावनाओं, विचारों तथा उद्देश्यो के विषय में अपितु दूसरो की भावनाओ तथा मानसिक स्थिति के विषय में भी अधिक जागरूक हो जाते हैं। बालक यह समझने में

अधिक सक्षम हो जाते है कि दूसरे कैसा महसूस करते है, वे सामाजिक परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करना सीखते है, सामाजिक व्यवहार का हिस्सा बनते तथा दूसरो के दृष्टिकोण को समझने लगते है।

विकास की शुरुवाती अवस्था में बालक अत्यंत अहंकारी होते हैं। दुनिया को स्वयं के दृष्टिकोण से देखते है तथा यह सोचने के लिए संघर्ष करते है कि दूसरे लोग दुनिया को कैसे देख सकते हैं।

जैसे–जैसे बालक बड़ा होता है उसकी सोचने की क्षमता बढ़ जाती है कि लोग सामाजिक परिस्थितियाँ किस प्रकार और क्यों कार्य करते हैं।

सामाजिक संज्ञान का महत्व

सामाजिक संज्ञान किसी व्यक्ति के अन्य लोगों की मानसिक अवस्थाओ को समझने तथा सोचने की क्षमता को प्रदर्शित करता हैं। अन्य लोगों के विचारो, उद्देश्यो, इच्छाओं, आवश्यकताओ, भावनाओं तथा अनुभवों पर विचार करने में सक्षम होने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सामाजिक संज्ञान से तात्पर्य है स्वयं की तथा दूसरों की मानसिक स्थिति के प्रति जागरूकता। मानसिक स्थिति से तात्पर्य है, संवेग, प्रेरक, आवश्यकताये तथा भावनाये। सामाजिक संज्ञानात्मक कौशल्य जैसे– लोगों की मानसिक स्थिति को समझने, वर्णन करने तथा भविष्यवाणी करने की क्षमता से हैं। बालको को एक मजबूत सामाजिक संज्ञान विकसित करने के अवसर दिये जाने चाहिए। विशेष रूप से शैशवावस्था के दौरान बालको में सामाजिक तथा संज्ञानात्मकता जागरूक रखना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

यह आवश्यक है कि बालक विद्यालय में प्रवेश से पूर्व सामाजिक दुनिया के साथ योग्य रूप से अंतः क्रिया करने हेतु तैयार हो। जैसेः सामूहिक गतिविधियो के माध्यम से बालको को साझा करने का महत्व सिखाये। यह क्षमता बालको में इस बात की समझ उत्पन्न करेगी की अन्य बालकों को भी उन्हीं खिलौनो से खेलने की इच्छा होती हैं जिन से वे खेल रहे हैं।

अध्ययनो से स्पष्ट हुआ है कि बालकों के सामाजिक संज्ञानात्मक कौशल का उनके संबंधो की गुणवता तथा विद्यालयीन सफलता पर सीधा प्रभाव पड़ता हैं। अधिक विकसित सामाजिक संज्ञान वाले बालक बेहतर संचारक, सामाजिक रूप से सक्षम, साथियो के मध्य लोकप्रिय, विद्यालय में खुश तथा शैक्षिक उपलब्धि में आगे होते हैं। इसके विपरीत अयोग्य, सामाजिक संज्ञान वाले बालकों को विद्यालयीन समायोजन में कठिनायी होती हैं। ये बालक माता–पिता के कठोर अनुशासन की वजह से अधिक हिंसक प्रतिक्रिया करते है। विद्यालय में कठिनाईयों का अनुभव करते है जिससे उनमें व्यवहारगत समस्याये देखी जाती है।

अतः पूर्व बाल्यावस्था में बालको में सामाजिक संज्ञानात्मक कौशल्य को विकसित करना आवश्यक है क्योंकि यह छोटे बालकों के सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता हैं।

वर्तमान अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि सामाजिक संज्ञान के विकास की शुरुवात जीवन के आरंभिक वर्षों में में भाषा सीखने से पूर्व हो जाती हैं। एक वर्ष की आयु से पूर्व ही शिशु दूसरो का ध्यान आकर्षित करने योग्य हो जाता हैं। सामान्य खेलो में हिस्सा लेकर तथा लक्ष्य केंद्रित व्यवहारो द्वारा।

दूसरे वर्ष के आस–पास बालक तेजी से जागरूक हो जाते है कि दूसरों की मानसिक स्थिति से अलग हैं। उदाहरणः जो उन्हे नहीं पसंद होता वह दूसरों को पसंद होता है।

पूर्व शालेय अवस्था में भाषा क्षमताओं के विकास से वे दूसरो के परिपेक्ष्य को समझने में सक्षम हो जाते है, जिससे सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन होता हैं। जिससे उनमे सहानुभूति तथा अभियोगात्मक व्यवहार का विकास होने लगता हैं। हालाकि सहज ज्ञान युक्त सामाजिक समझ से प्रतिवर्त सामाजिक समझ में परिवर्तन धीरे–धीरे विकसित होता हैं। बालको के सामाजिक संज्ञान में भिन्नता बालक तथा पारिवारिक दोनो ही कारको पर निर्भर करती हैं।

मजबूत सामाजिक संज्ञान वाले बालकों में मजबूत भाषा योग्यता,संवेगात्मक नियंत्रण तथा कार्यकारी कार्य कौशल (जैसे–नियोजन कौशल्य, आत्म–नियंत्रण तथा संविगात्मक लचिलापन) होते हैं। स्वयं के व्यवहार एवं संवेगो पर नियंत्रण कर वे दूसरो के दृष्टिकोण को समझने तथा दूसरो के साथ संपर्क स्थापित करने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त सकारात्मक पालन–पोषण की पद्धति तथा योग्य सहोदर संबंध जैसे पारिवारिक कारक बालको के समाजिक तथा संज्ञानात्मक समझ को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से जब अभिभावक बालको को सुरक्षित लगाव तथा मार्गदर्शन प्रदान करते है तो बालकों में प्रारंभिक सामाजिक–संज्ञानात्मक कौशल्य विकसित होता हैं। सहोदरों के मध्य अंतः क्रिया सकारात्मक है अथवा नकारात्मक इसका प्रभाव भी बालकों के सामाजिक संज्ञान पर पड़ता है। उदाहरणः यदि सहोदर बालक को काल्पनिक खेल, पारिवारिक संवाद,उकसाने तथा चिढ़ाने के अवसर प्रदान करते है तो कई बार आपसी विवाद भी विभिन्न दृष्टिकोणों से सामंजस्य के माध्यम से सामाजिक संज्ञान को बढ़ावा देते है। उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के अनुभवों, ज्ञान, सामाजिक प्रभावो, भावनाओ तथा सांस्कृतिक विविधताओं की पृष्ठभूमि भिन्न–भिन्न होती हैं, जिसका प्रभाव सामाजिक संज्ञान पर होता हैं। व्यक्ति के शारीरिक मानसिक दोष, कार्यात्मक अक्षमता, बेरोजगारी तथा निम्न जीवन स्तर भी सामाजिक संज्ञान को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक संज्ञान विकसित करने हेतु उपाय

परिवार में की जाने वाली अनेक गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक संज्ञान का विकास किया जा सकता हैं। अभिभावकों को अपने बालकों के साथ खेलते समय उन्हे कुछ मार्गदर्शन एवं स्वायत्तता में संतुलन प्रदान करना चाहिए। इसके अलावा जब बालकों के दुर्व्यवहार को ठीक करने के लिए अत्यधिक अनुशंसा की जाती है तो बालकों में प्रारम्भिक जागरूकता विकसित करने में सहायता मिलती हैं। इससे बालक समझ जाते हैं की लोगो की भावनाए तथा इच्छाएं भिन्न–भिन्न होते है।

विभिन्न गतिविधियों में बालकों के साथ संवाद करते समय संवेदनशील एवं देखभाल करने वाली पालकत्व की शैली अपनानी चाहिए। सकारात्मक संवाद के माध्यम से बालकों को अपने सामाजिक तथा संवेगात्मक अधिगम में सुधार करने के अवसर प्राप्त होते हैं जिससे बालकों को अपने आयु वर्ग के बालकों के साथ सकारात्मक संवाद करने की प्रेरणा मिलती हैं। वास्तव में ये सामाजिक व्यवहार केवल सामाजिक संज्ञान का विकास करते हैं बल्कि बालकों को यह भी सिखाते हैं कि अपने साथियों के साथ सकारात्मक बातचीत किस प्रकार करें जिससे उनमें सामाजिक एवं संज्ञानात्मक समझ से असामाजिक व्यवहार (चिढ़ाना, धमकाना तथा झूठ बोलना आदि) की संभावना कम हो जाती हैं।

निष्कर्ष

सामाजिक संज्ञान विशेष रूप से मन के सिद्धांत के तहत अध्ययन किया जाने वाला मुख्य रूप से एक मानक विषय है। यह बुनियादी विकास से संबंधित है जो लगभग प्रत्येक बालक में होता है, किन्तु कुछ नैदानिक अपवाद को छोड़ कर –विशेष रूप से आत्मकेंद्रित बालक विशिष्ट विकास में हालांकि सामाजिक संज्ञान कुछ ऐसा नहीं है जिसके लिए स्पष्ट अभिभावक शिक्षण की आवश्यकता होती है। फिर भी इसका अर्थ यह नहीं है कि माता–पिता या शिक्षकों की कोई भूमिका नहीं है। विभिन्न प्रकार के सामाजिक अनुभव सामाजिक–संज्ञानात्मक क्षमताओं की शुरुआत को तेज कर सकते हैं, जिसमें माता–पिता के बच्चे के पालन–पोषण की शैलियाँ शामिल हैं। वर्तमान अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि सामाजिक–संज्ञानात्मक कौशल कम से कम हैं, कुछ हद तक प्रशिक्षित प्रासंगिक भाषा में निर्देश देना विशेष रूप से फायदेमंद हो सकता है। विकास को गति देने के बजाय वयस्क बालकों की सामग्री को प्रभावित कर सकते हैं। इसके लिए सामाजिक–संज्ञानात्मक विश्वास के विकास की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए सभी बच्चे स्वयं के विषय में आत्म–धारणाएं या विश्वास बनाते हैं, लेकिन कुछ बच्चों की आत्म–धारणा दूसरों की तुलना में अधिक सकारात्मक और विकास बढ़ाने वाली होती है। सामाजिक–संज्ञानात्मक क्षमताओं का उपयोग न केवल सकारात्मक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है (जैसे–सहानुभूति, संवाद) बल्कि

हानिकारक लोगों के लिए भी जैसे छेड़ना या धमकाना। सामाजिक संज्ञान पर काम का सबसे स्पष्ट व्यवहारिक निहितार्थ लंबे समय से स्पष्ट है, हस्तक्षेप जो बच्चों के सामाजिक–संज्ञानात्मक विश्वासों को सकारात्मक दिशा में बदलते हैं, उनके सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक स्वीकृति पर परिणामकारी प्रभाव डाल सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. https://www.verywellmind.com/social-cognition-2795912.
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Social_cognition.
3. https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/B9780123851574004619.
4. https://www.nios.ac.in/media/documents/secpsycour/English/Chapter-15.pdf.
5. https://onlinelibrary.wiley.com/doi/abs/10.1002/9781119170235.ch9.
6. https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyg.2016.01762/full.
7. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC2375957/.
8. https://nobaproject.com/modules/social-cognition-and-attitudes.

––==00==––